मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटार्यड)

वर्ष 7	मंगलवार 10 फरवरी 1981	संख्या 9

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १२-१०-१९८०

संतमत मारग झोना है, हां ।
त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की बारी ।
कारन तज महा कारन धावे, तब समझो अधिकारी ॥
धरम करम व्यौहार न छोड़े ढूंढ़े सार न इनमें ।
सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में ॥
संजम नियम जप तप कर्मों' नहीं किंचित कठिनाई ।
सहजयोग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई ॥
सतगुरु सत्त नाम सतसंगत, समझ सहज में धारे ।
फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़ चैतन निखारे ॥
राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया ।
सुरत शब्द मत सब का टीका, सुरत में शब्द को पाया ॥

राधास्वामी । यह शब्द मेरे गुरु महाराज दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी का है । इसमें वो

लिखते हैं कि संतमत का मार्ग बहुत झीना यानि बहुत सूक्ष्म है। मैंने सोचा वह मुश्किल क्या है ? मैं इसको अपने तजुर्बे से ब्यान करके आसान कर देना चाहता हूं।

मैं हमेशा कहा करता हूं कि मैं स्वयं तो इस पंथ में आया नहीं, अगर मैं स्वयं राधास्वामी मत में आने से पहले इस मत की पुस्तकें पढ़ता तो मैं कभी इस मत में न आता। क्योंकि इन्होंने हिन्दुओं मुसलमानों, वेदान्तियों आदि सब का खण्डन किया है किसी को नहीं छोड़ा। उस समय किस्मत मेरी इस संतमत में मुझे ले आई। तो मैंने प्रण किया था कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा।

मैं सोचता हूं यह मार्ग सूक्ष्म कैसे है ? जिस सार शब्द को पकड़ने के लिए संत उपदेश करते हैं इसके लिए पहले इन्सान को मन के ख्यालात को एकाग्र करना पड़ता है, फिर इन ख्यालात को छोड़ना पड़ता है। ख्यालात को छोड़ने के बाद फिर प्रकाश आता है। फिर प्रकाश को छोड़ना पड़ता है, फिर आगे जो शब्द आता है वो कहते हैं कि जब आदमी उसको

पकड़ता हैं तब वो संतमत की वास्तविक व ऊंची समझ का अधिकारी होता हैं। अब मैं सोचता हूं कि यह ठीक है मगर प्रत्येक मज़हब या पंथ वालों ने लोगों को अपनी तरफ ख़ेंचने के लिऐ रोचक व भयानक बातें कही हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द ! तू जो लोगों को उपदेश करता फिरता है तुमने सुरत शब्द योग का अभ्यास किया है, इसका परिणाम क्या निकला ? वहां पहुच कर तुम को क्या मिल गया ? मेरे अन्दर एक हालत पैदा हो गई जिससे कहने, सुनने, सोचने, समझने चिन्ता, फिकर या गम करने की आवश्यता अब महसूस नहीं होती। कोई ऐसा ख्याल नहीं आता कि परमात्मा है या नहीं, न यह ख्याल ही रहता है कि मैं जीवित हूं या मृतक हूं या मेरा कोई है या नहीं, एक ऐसी हालत तारी हो जाती है। अब तुम ही बताओ इस हालत को कौन चाहता है ? दुनियादार तो दुनिया, और मन के आनन्द, ख़ुशी, पुत्र, इज्जत और मान चाहते हैं। इसलिए यह संतों का मार्ग केवल उन्हीं के लिए है जिनको यह एहसास हो चुका है कि मन के चक्र में सुख नहीं है और

मन के इस संसार से उपराम हो कर शान्ति या सुख की खोज करते हैं यह मेरा तजुर्बा है। जो आदमी इस मार्ग पर जाना चाहते हैं उनको क्या करना चाहिए? उनको चाहिए। कि वह सब से पहले अपने मन को एकाग्र करें। जो तरह २ के ख्याल और विचार उनके मन में उठते रहते हैं उनको रोकने के लिये सुमिरन यानि अजपा जाप बताया जाता है। तुम हिन्दु हो राम-राम से करो, मुसलमान हो अल्ला हू से करो, सिक्ख हो वाहेगुरु से करो, राधास्वामिये हो तो राधास्वामी से करो, पंचनामी हो तो पांच नाम से करो। अभिप्राय यह है कि जो भी तुम्हारे अपने मज़हब या गुरु ने तुमको शब्द दिया हैं (मैं इन झगड़ों में नहीं पड़ता) उसे लम्वा २ करके सुमिरन करो ताकि तुम्हारे मन की वृत्ति दोनों भौओं के मध्य में ठहरे। जो व्यक्ति इस तरह लम्वा लम्वा करके अजपा जाप करता है उसको क्या मिलता है? उसके मन की चंचलता दूर होती है और एक प्रकार का आनन्द मिलता हैं। मुझे अब भी जब कभी तकलीफ महसूस होती है, बाहरी विचार आ जाते हैं या वातावरण ऐसा हो जाता है जहां मन विक्षेप करता

है तो सुमिरन मेरी सहायता करता है। हालां कि मैं इतना ऊंचा चला गया हूं मगर जब शरीर में आता हूं, शारीरिक रोग होता है या कोई वाह्य प्रभाव ऐसे पड़ जाते हैं, व कोई नई चीज़ ऐसी आ जाती है तो उस समय मन को कैसे रोकता हूं ? केवल सुमिरन से अपने मन को रोकता और अपने आप को शान्ति देता हू। वह जो ऊचा अभ्यास मैने किया हुआ है ऐसी हालत में शान्ति नहीं देता। मान लो कोई मर गया, कोई ऐसी-वैसी बात हो गई तो अमल व ज्ञान से शान्ति मिल सकती है मगर खास कर जब शारीरिक रोग से होता है उस समय कोई और साधन अपने आप को बचाने का नहीं है। मैं तुमको अपना भाई समझ कर अपना तजुर्वा वताता हूं कि जब भी कोई मुसीबत या कोई चिन्ता, फिकर या अशान्ति तुम्हारे सिर पर आये तो उस समय सुमिरन में लगो और ख्याल के साथ अपने मन को भ्रूमध्य में रोका करो। जब यह होगा तो तुम्हारे मन को शान्ति मिल जायेगी। तो सुरत शब्द से एक तो मुझे यह मिला कि जब कभी मेरा मन अशान्त होता है तो मैं सुमिरन यानि अजपाजाप से अपने मन को भ्रूमध्य में ठहरा लेता हू और

शान्ति प्राप्त कर लेता हूँ। सुरत शब्द योग से मुझे दूसरा लाभ यह है कि जो व्यक्ति को एक स्थान पर इकट्ठा करता है, चाहे तुम गुरु के रूप से इकट्ठा करो, राम के रूप से इक्ट्ठा करो या कृष्ण के रूप से इकट्ठा करो किसी भी रूप से करो, किसी भी मूर्त के रूप से एकट्ठा करो तो क्या हो जाएगा ? तुम्हारे मन की will Power यानि इच्छा शक्ति बढ़ जाएगी। तो जिस प्रकार की तुम्हारी इच्छा होगी वह पूरी हो जाएगी; यह मेरी समझ में आया है। अब इस का सबूत बताता हूं कि मिसम्रेज़्म वाले जब मिसम्रेज़्म सीखते हैं तो क्या करते हैं ? वो वाहर दीवार पर एक काला गोल निशान वना लेते हैं और उसे देखते रहते हैं। जिस समय उनको वह काला निशान चमेली का फूल या सफेद रोशनी दिखाई दे जाती है तो उनमें यह शक्ति आ जाती है कि किसी को वेहोश कर देते हैं या और ऐसे कई चमत्कार कर देते हैं। क्यों कर देते हैं ? क्योंकि उनकी मन की वृत्ति एकाग्र हो जाती है। तो संतों के मार्ग में अपने ध्यान से जो व्यक्ति किसी भी इष्ट का ध्यान करता

है, कोई देवी का करता है, कोई राम का करता है (इन झगड़ों में मैं नहीं पड़ता) किसी न किसी रूप का तुम ध्यान करो। हम लोग गुरु के रूप का ध्यान करते हैं तो इस रूप के ध्यान करने से क्या हो जाएगा ? तुम्हारे मन की will Power बढ़ जाएगी, जो कुछ तुम चाहोगे, जो तुम्हारी इच्छा होगी वह पूर्ण होती रहेगी। यह तजुर्बा मेरा अपना है। यहां और विदेश में कितने ही हजारों आदमी है वह मेरा ध्यान करते हैं उनके अन्दर मेरी मूर्ति बन जाती है। वह लिखते हैं बाबा, तेरी मूर्ति बन जाती है हमारा यह कार्य हो गया, हमारा यह कार्य हो गया, और बाबा फकीर को पता भी नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है। तो इससे क्या साबित हुआ कि ऐ इन्सान ! जो कुछ है तेरे अपने अन्दर है। तू वैसे ही गुलाम बना हुआ है। तू समझता है कि कोई बाहर का आदमी तुम्हें कुछ देता है यह ग़लत है। तुम्हारे अपने ही प्यार की शक्ति से, ध्यान के करने से तुम्हारी इच्छा शक्ति बढ़ जाएगी और अपने जीवन में जैसी इच्छा करोगे उसमें तुम्हारी पूर्ति होने

का बहुत सामान मिल जाएगा। कई बार मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता होती है वो स्वाभाविक ही अपने आप आ जाती है। लोग हैरान हो जाते हैं कहते हैं कि यह क्या हो गया।

आपके पास भी दौलत है, मेरे पास भी दौलत है, आप सुमिरन ध्यान का साधन करके देखो। मगर यह साधन होगा नहीं जब तक तुम खास २ नियम पूरे नहीं करोगे। पहला नियम यह है कि आप का जो मन है इसको ठीक रखने के लिए आपको शुद्ध कमाई खानी पड़ेगी। जो व्यक्ति जिस पर उसका अपना अधिकार नहीं है वो लेकर खाता है उसका मन कभी साफ नहीं हो सकता। अगर वह कोशिश भी करे तो उससे न सुमिरन ही बनेगा और न ही उससे संसार बनेगा। यही कारण हैं मैंने कह तो दिया कि सुमिरन करो और ध्यान करो मगर मेरे पास पत्र आते हैं कई व्यक्ति बोलते है कि हमसे सुमिरन ध्यान नहीं होता क्यों नहीं होता ? क्योंकि उनका जो बातावरण है जो नियम उसके लिए चाहिए वो पूरे नहीं होते। इसका नियम क्या है ? सबसे प्रथम व्यक्ति की अपनी खुराक शुद्ध होनी चाहिए। दूसरे इन्सान को अपना मानसिक

और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखने का प्रयत्न करना चाहिए। जो व्यक्ति ज्यादा विषयविकार कमाता है उसके मन में अशान्ति का आना आवश्यक है। न उससे सुमिरन होगा और न ही उससे ध्यान होगा मेरा स्वयं यही हाल था। 13 वर्ष की आयु में शादी हुई। 1905 में मैंने नाम लिया। सन् 1905 से 1917 तक बिना रोने के और मस्तक निवाने से कुछ नहीं बना। क्यों नहीं बना ? क्योंकि मैं गृहस्थ में फंस गया। इसलिए उस समय उस शब्द सुरत योग को प्राप्त करने से पहले मैंने मानव बनो की अबाज उठाई है। क्यों ? ताकि जीवों को सचाई का मार्ग मिल जाये। जो नौजवान ब्रह्मचर्य खोते हैं फिर अशान्ति ही उनकी किस्मत में आती है। मैं उनको समझाता हूं मूर्खो ! अपने ब्रह्मचर्य को कायम रखो। जो व्यक्ति अपने ब्रह्मचर्य को गिरायेगा उसको या तो डाक्टर लूटेंगे या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे यह मैं कहना चाहता हूं। जब तक यह नियम कायम नहीं है तब तक यह सुरत शब्द योग का भी तुम्हें कोई लाभ नहीं। मेरे पास कई स्कूल मास्टर आया करते हैं उनको मैं यही कहा करता हूं कि

वो अपने विद्यार्थियों को उनका Character Building बतायें मन के इक्ट्ठा न होने का कारण यह भी है कि आर्थिक अवस्था की कठिनाई होती है। इसलिए हर व्यक्ति को पहले अपनी रोजी की ओर ध्यान करना चाहिए। मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामी नाम में शामिल हो जायोगे या राधास्वामी नाम जपो। तुम सुमिरन करो ध्यान करो मगर यह सुमिरन और ध्यान तुम्हारा नहीं बनेगा जब तक कि यह नियम पूरे नहीं होते। ध्यान से क्या मिलेगा ? एक तो तुमको मस्ती आएगी और खुशी मिलेगी जो कुछ तुम्हारे चित्त की वृत्ति के अन्दर Sub conscience mind में है वो पूरा होगा।

मैं लोगों को नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता ? लोग अपने अन्दर बुरे ख्यालात रखते हैं अगर वो ध्यान करेंगे तो जैसी अशायें उनके मन में हैं वो पूरी होंगी। क्योंकि उनके दिल के अन्दर गलत ख्यालात हैं यह साधना करने से उनको लाभ की वजाये नुकसान होगा। यह है Point इस लिए हालां कि मैं degree holder हू मगर मैं दुनियां

को नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता? क्योंकि एक आदमी है उसके मन में नफरत है, द्वेष है एक व्याक्ति कामी है वो काम को रोकना नहीं चाहता अभ्यास करेगा ज्यादा कामी हो जायेगा। एक आदमी लालची है, धोखे बाज़ है वो अगर अभ्यास करेगा तो ज्यादा धोखे बाज़ हो जाएगा। अगर वो आदमी जो बुराईयों कों दूर करना चाहते हैं अगर वह अभ्यास करें तो उनकी बुराईयां दूर हो सकती हैं। इसीलिए बार-बार कहा जाता है कि गुरु बिना नाम नहीं जपना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि गुरु जो आज्ञा किसी को देता है वहीं वास्तव में नाम है। गुरु जो कुछ तुम्हें कहता है उस पर अमल करो। इस तरह समझा कर मैंने मार्ग सुगम कर दिया है। वहुत किताबें पढ़ने की आवश्यकता नहीं रही आसान तरीका है चलना चाहते हो तो चलो।

जब यह दर्जे पार हो जाते है यानि ध्यान बन जाता है तो फिर क्या होता है? अगर कोई इस मंजिल से आगे जाना चाहता है तो उसके लिए है

केवल प्रकाश व रोशनी। वो प्रकाश हमारे अन्दर कई प्रकार का हैं कहीं वह पीला हैं, कहीं वह नीला है, कहीं वह चांद की तरह है, कहीं वह सफेद है। जिस प्रकार की तुम्हारी प्रकृति है, जिस प्रकार के तुम्हारे ख्यालात है, जो व्यक्ति सांसारिक इच्छा रखता है Grossmatter दौलत, सोनां, ज़मीन पुत्र, मकान इत्यादि की इच्छा रखता हैं जब वह अभ्यास करेगा या जब अभ्यास में जाएगा उसके अन्दर जैसे दीये की रोशनी होती है ऐसी रोशनी जाएगो क्योंकि उसके मन के अन्दर इस पृथ्वी तत्व की सभी चीजों की इच्छा मौजूद है। प्रत्येक व्यक्ति के अ न्दर जिस प्रकार की इच्छा है उसके अनुसार उसके भीतर उस प्रकाश की रंगत पैदा होगी। क्योंकि जो रोशनी है वह तुम्हारे अपने ही ख्यालात की हैं। तो ज्यों ज्यों आपका मन साफ होता जाएगा, वासनायें और इच्छायें खत्म होती चायेगी, ज्यों ज्यों आप अभ्यास करोगे रोशनी भी सफेद होती जाएगी। तुम्हारे अन्दर रोशनी पैदा होती है तुम रोशनी देखते हो अगर तुम्हारे मन के अन्दर सांसारिक इच्छाये हैं तुम लाख प्रयत्न करो कि तुम्हारे अन्दर सफेद रंग की

रोशनी पैदा हो वो नहीं आएगी। क्योंकि उस रोशनी ने पैदा होना है जैसी वासनायें तुम्हारे अपने अन्दर हैं। इसलिए जो व्यक्ति शब्द योग के लिए आना जाना चाहते हैं वो जब तक वासना रहित नहीं हैं इच्छायें कम नहीं होगी वह वहां नहीं पहुँच सकते। फिर क्या करना चाहिए ? सुमिरन है ध्यान है और अपने ख्यालात को पहले शुद्ध करने की कोशिश करो। हम लोग यह सोचते हैं कि हमें यह मिल जाये वह मिल जाये। देखो दोस्तो ! लाख प्रयत्न तुम करो जो कर्म तुमने पिछले किये हुये हैं तुमको वह मिलेंगे अत: आदमी को चाहिए कि कुछ न कुछ किसी की सेवा, किसी की सहायता, किसी दु:खी व्यक्ति को सहारा इस जीवन में करते रहो ताकि अगर दूसरा जन्म तुमको मिले तो जो कुछ तुमने दिया हुआ है उसका तो फल तुम्हें मिल जाये।

संतमत मारग झीना है, हां।
त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे फिर कारन की बारी।
कारन तज मना कारन धारे, तब समझो अधिकारी।,

अब स्थूल, सूक्ष्म, और कारण यह दर्जे बताये हैं। स्थूल तो हमारे मन में जो संसार की इच्छा

रखते हैं यह स्थूल हैं, जब हमप्रेम और खुशी के लिए अभ्यास करते हैं यह सूक्ष्म है, जब हम अपने अन्दर आनन्द की इच्छा करते हैं यह कारण है। तो यह सत् चित्त और आनन्द तीन चीजें हो गई। जो संतों का मार्ग है वो सत्, चित्त, आनन्द से आगे है जब तक एक आदमी शारीरिक चित्त के और रूह के बोधमान का अनुभव नहीं कर लेता वह किसी प्रकार अपने असली घर को नहीं जा सकता इसलिए सत्, चित और आनन्द यह तीन हालतें तन की, मन की और आत्मा की हैं।

"धर्म, कर्म, विहार न छोडे, ढूढ़ें सार न इनमें"

वह कहते हैं कि तुम इस मार्ग पर चलो मगर तुम्हारा जो धर्म, कर्म, व्यवहार है इसे मत छोडो जब तक तुम्हारा जीबन है यह करो मगर इस में फसो नहीं। मैं तो कहता हूं कोई छोड़ नहीं सकता चाहे संत हो या परमसंत हो। क्या यह दुनियां के व्यवहार नहीं करते ? मैंने यह मन्दिर बना लिया है क्या यह व्यवहार नहीं है ?

"सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में"

दाता ने जो लिख दिया और संतों ने भी कह दिया सुरत शब्द योग। अब जब मैं इन दर्जों से आगे निकल गया तो अब मैं सोचता हूं कि वो सार क्या है ? वो सार यह है कि इन्सान अपने आप को भूल कर सर्वव्यापक हो जाता है यह मेरी समझ में आया है। अभ्यास में मुझे पता नहीं था कि मैं कहां हूं, मैं कौन हूं, क्या मेरा हाल, है इत्यादि। मैं शब्द योग से एक ऐसी हालत तक चला जाता हूं यहाँ मुझको अपनी होश नहीं रहती, एक सर्वव्यापकता आ जाती है यानि जुज़ जो है वह कुल में मिल जाता है यह मुझे शब्द योग से मिला है और कुछ नही मिला है। अगर आप इस मार्ग पर सुमिरन और ध्यान से चलेंगे तो तुम्हारी दुनियां बन जाएगी और मन की शान्ति हासिल होगी। मगर हरेक को तो इच्छा नहीं होती कि वह विल्कुल गुम हो जाये। यह हर व्यक्ति का समय होता है एक आदमी इस Line का अधिकारी नहीं होता जैसे हम बूढ़े हो गये अगर बच्चे को कहो कि वह बूढा हो जाये तो नहीं होगा। इस तरह से यह हर व्यक्ति का समय होता है। तो-

मैं आपको क्या कहना चाहता हूं कि सुबह शाम थोड़ा-थोड़ा अजपा जाप यानि सुमिरन किया करो। जप ध्यान पक जाये तब फिर आगे जाना। दूसरे अपने मन के अन्दर वासना यानि इच्छा ठीक रखो, अच्छा ख्याल और अच्छी आस रखो। किसी से नफरत, ईर्ष्या मत रखो। विषय विकार का जीवन जहाँ तक हो सके कम करो, अपनी संगत अच्छी रखो, घरों में रहते हो प्रेम और संहानुभूति से रहो, तुम्हारा जीवन बदल जाएगा। मैं अपनी जिम्मेवारी को बहुत महसूस करता हूं। मैं सोचता हूं लोग मुझे प्यार करते हैं, इतना खर्च करते हैं मैं उनको क्या दे सकता हूं ? मैं सत्य प्रिय मानव हूं मेरे पास सिवाय शुभ भावना या सच्ची बात बताने के दोस्तो, और कुछ नहीं। जो मुझ से प्यार करते हैं वह मेरे साथ प्यार नहीं करते वो अपने ही मन के साथ मेरी शक्ल में प्यार करते हैं। मेरे साथ कौन प्यार करता है ? आदमी अज्ञानी है, हम किसी के साथ प्यार करते हैं वास्तव में अपने मन के साथ ही प्यार करते हैं बल्कि शक्ल दूसरी ले लेते हैं। लोग कहते हे बाबा तेरा ध्यान करने

से हम को यह मिल गया। अरे, तुम मेरा ध्यान करते हो मैं तो नहीं देता। वो तुम्हारे ध्यान की शक्ति तुमको देती हैं। ऐसा स्पष्ट कहने से मेरी आत्मा को शन्ति मिलती है कि मैंने तुम लोगों में से किसी के साथ हेराफेरी, धोखा फरेव नहीं किया, अगर में चुप कर जाऊं और इस से यह प्रभाव दूसरे के मन में बैठ जाये कि हां बाबा फकीर ने हमको यह दिया तो मैं दोषी हूं। मैं इसकी सज़ा से बच नहीं सकता। अब आप समझे की नहीं समझे ? मैं चाहता हूं कि आप लोग आज़ाद हो जायें, किसी के अधीन न रहें। पीछे से बाहर के गुरु का एहसान रह जाता है। तुम को मेरी माताओं, मेरी वहनों, मेरे वुजुर्गों, मेरे वीरो व बच्चो ! जो कुछ मिलना है वो तुम्हारे अपने ही विश्वास अपनी ही श्रद्धा, अपनी ही इच्छा का नतीजा मिलना है, किसी महात्मा, गुरु खुदा ने वाहर से तुमको कुछ नहीं देना। जो कुछ तुमको मिलता है तुम्हारी अपनी ही आशा, अपनी ही चाह, अपनी ही वासना के कारण मिलता हैं। हम समझते हैं कि हमको देने बाला बाबा फकीर

है, राम या कृष्ण है या देवी देवता है, यह बिल्कुल झूठ है। यह मैंने अपना तर्जुबा बता दिया कि लोग मेरा ध्यान करते हैं उनके काम हो जाते हैं और मैं धर्म से कहता हूं कि मुझे पता नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है, कौन उसको देता है यह है सच्चाई जिसे बताने के लिए इस फकीर चन्द के चोले में बैठ कर बोलता हूं ताकि जीव अज्ञान में आकर लुट न जायें। मैं आप लोगों की आंखों में मिट्टी डाल कर आपसे धन लेना नहीं चाहता। चार दिन का जीवन है, किसलिए पाखण्ड जगाऊं। मेरे कर्मों ने मेरे साथ जाना है तुमने तो मेरे साथ नहीं जाना। अभिप्राय यह है कि मैंने आज आप को बहुत कुछ कह दिया केवल ईशारों में नहीं बल्कि बिल्कुल स्पष्ट रूप में कि अपने अन्दर में प्रेम करना सीखो। गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है होशियारपुर या कहीं आसमान में नहीं बल्कि तुम्हारे अन्दर रहता है। बाहरी गुरु का यह कर्त्तव्य है कि वह तुमको यकीन करा दे कि जो कुछ है दोस्त, तेरे अन्दर है यही मुझे दाता जी कहा करते

थे। जब मैं उन से ज्यादा प्रेम किया करता था क्योंकि मैं तो वाहरी गुरु महाराज को समझ कर उनके पीछे दौड़ता था तो वो मुझे लिखा करते थे कि किसलिए पागल हो गया है तेरे घर में जो माल खजाना है, सब कुछ तेरे अन्दर हैं। तो आप लोग आते हैं, वाहर के गुरु की भक्ति यही है जो आप लोग इस समय कर रहे हैं। मेरी बात को सुनो और समझो यह गुरु की भक्ति है शेष जो देना लेना है यह तो संसारिक व्यवहार है मगर मैं चार दिन के जीवन में आप लोगों की आंखों में मिट्टियां डालकर इस ख्याल से कि हां मैं तुम्हारे अन्दर प्रगट होता हूं मैंने यह कर दिया मैंने वह कर दिया इस तरह से मैं किसी से पैसा लेना नहीं चाहता हूं और न ही मुझे आवश्यकता है। हां परोपकार के विचार से जिसकी इच्छा हो दे। दाता दयाल का शब्द है :—

गुरु तो तेरे पास फकीरा,
त्याग भ्रम विचार मन का छोड़ जगत की आस।
आस कर गुरु के चरण की, जग से होये निराश ॥

अब देखो उन्होंने कोई झूठ तो नहीं वोला। वो कहते हैं जो व्यक्ति सांसारिक आशाओं में फंसा हुआ है उसको तो शान्ति नसीब नहीं हो सकती। हां आशायें पूरी हो सकती है अगर वह सुमिरन ध्यान करे तो। मगर वह कहते हैं आस गुरु के चरण की। गुरु के चरण हैं क्या? दुनियां इन चरणों को पूजते पूजते मर गई, मैं भी मर गया, गुरु के चरण हैं प्रकाश। यही राधास्वमी मत में राय-साहिब सालिग्राम साहिब ने अपनी बाणी में लिखी है सतगुरु कौन ? सतगुरु केवल शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल, उनके चरण प्रकाश। हम लोगों को इस बात का पता नहीं। हम इन्हीं पैरों को पूज पूज कर मर गये और हम गुरुओं ने तुम लोगों को मूर्ख बनाया और अपना उल्लु सीधा किया :—

तेरे मन में, तेरे तन में, तेरे सांसों सांस।

यह देखो ! वो कहते हैं गुरु तेरे मन में, तन में रहता है। तू सांस लेता है, आप अगर अकल रखते हो सोचो कि वह कौन सी चीज़ है जो मेरी सांस में रहती है। अरे दिवाने

तेरा अपना ही आप है मैं ही तो सांस लेता हूं। इस भ्रम में मैं भी दौड़ा करता था। जिसकी तुम खोज करते फिरते हो तुम अपने ही भ्रम में अपनी ही तालाश करते फिरते हो संसार में। मगर यह इतनी ऊंची मंजिल है कि प्रत्येक व्यक्ति इस को नहीं समझ सकता। ऐ इन्सान! तेरी अपनी ही आत्मा तेरा गुरु है। तेरी अपनी ही आत्मा तेरा शिष्य है, तू भ्रम में है। सांसारिक इच्छाये और चाहें हैं इसलिए तेरी समझ में नहीं आता और तू भटकता फिरता है। मैं भी बहुत भटका हूं। कोई चोज़ बाहर नहीं है :—

गुरु बसे दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास।

वो कहते हैं तेरे भीतर 24 घंटे गुरु वसता है मेरे अन्दर 24 घंटे कौन सा गुरु बसता है। सोचो, मैं ही तो वसता हूं और कौन होता है मैंने यह कार्य केवल इसलिए किया है कि जिस तरह मैंने मूर्ख बन कर अपने अज्ञान में अपनी दौलत लुटाई, यह और बात थी कि मेरे दाता ने मुझे लूटा नहीं। वरना मेरे लुटने में कोई कसर नहीं थी। रुपया किसी न किसी तरह मुझे वापिस

लौटाया । तो मैं भी चाहता हूं कि तुम अज्ञान में लुटो नहीं । खुशी से चाहे दो उसका कोई दु:ख नहीं :—

गुरु नहीं तीर्थ व्रत में गुरु न योग अभ्यास ।

वो कहते हैं तीर्थ में गुरु नहीं । व्रत में गुरु नहीं, तुम्हारे योग अभ्यास में भी गुरु नहीं । तो फिर गुरु हुआ कौन ? तेरा अपना ही आप, अपनी ही ज़ात तेरा गुरु है । अपने भ्रम में हम आप फंस कर शेर से गीदड़ और बकरी बन गये :—

ढूंढ अपने हृदय में, वहां है उनका वास ।

मैंने हृदय में ढूंढ़ा कैसे ढूंढ़ा, सुमिरन किया, ध्यान किया, प्रकाश देखे, जब से मन के रूप का पता लगा तो मैं उसको शरीर, मन और प्रकाश के परे ढूढ़ने के लिए मजबूर हो गया । वो जो चीज़ है वो गुरु है । वो कौन है ? वो मेरी अपनी ज़ात है :—

मैं आप शमा मैं खुद परवाना ।
कोई कुछ समझें कोई कुछ समझे ।।

मगर कौन सी चीज़ है जो हमको गिराती है ? दुनियां की आशायें, दौलत, इज्जत, मान की भूख।

कर्म में माया व्यापे धर्म जम की फांस।
मन में अनवन देखी, बन में भ्रम था सन्यास ।।

इसको प्राप्त करने के लिए हम धर्म; कर्म करते हैं। वो चीज़ तो हमारी ज़ात है। हम ने भ्रम में आकर धर्म और कर्म किये। योग अभ्यास किया :—

तेरी चिन्ता गुरु को होगी क्यों हैं तुझको त्रास।

कहते हैं गुरु को तेरी चिन्ता होगी। मैं अपनी चिन्ता स्वयं ही तो करता था। क्या कहूं मेरी बात को समझने वाला कोई नहीं। हम किसी वस्तु को प्राप्त करते हैं। गुरु ने क्या चिन्ता करनी है हम आप ही चिन्ता करते हैं।

राधास्वामी चरण गह, अज्ञान का कर नास।

अज्ञान का नाश नहीं होता था इस अज्ञान का नाश करने के लिए मुझे यह काम दिया गया

था, न मैं गुरु हूं न मैं महात्मा हूं मैं कुछ नहीं बना बात मेरी समझ में आ गई :—

संतमंत मारग झीना है. हां।
संयम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई।
सहज योग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई॥

जब बात समझ में आ जाती है फिर ज्यादा अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं रहती। अब मैं ज्यादा अभ्यास क्या करूं, कुछ भी नहीं, अब अपने आप को खेंच कर अपने आप में ठहरा देता हूं, साधन सरल हो गया बात समझ में आ गई :—

सतगुरु सत नाम सतसंगत, समझ सहज में धारे।

इस बात की समझ सतगुरु, उसकी संगत और नाम की प्राप्ति से मिलती है। इसलिए जितनी महिमा है यह सतसंग की है :—

फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़, चेतन निरवारे।

जड़ चेतन की निरवार क्या है? हमारो जो

अपनी सुरत है वही शरीर में आती है और उस में फंस जाती है, उससे प्रेम कर लेती है वो ग्रंथी बन जाती है। जब ज्ञान और समझ आ जाती है तो ग्रंथी खुल जाती है। चेतन हमारा अपना रूप है, हम हैं। जब Gross matter में या मन के ख्यालात में हम आते हैं तो उस को सत् समझ कर उस में फंस जाते हैं और वो गांठ पड़ जाती है। जैसे दो चीजों में गांठ डाल दें। ध्यान हो गया तो गांठ खुल गई :—

राधास्वामी ने भेद वताया, सुरत शब्द मत गाया।
सुरत शब्द मत सब का टीका, सुरत में शब्द को पाया ॥

कहते हैं सुरत में शब्द को पाया। हम नहीं, हम में से शब्द निकलता है। मैं कहा करता हूं कि जो हमारा अपना आप है उस से शब्द निकलता है, यही दाता ने कहा है। यह सूक्ष्म विषय हैं इसलिए वो कहते हैं कि सतसंग की महिमा है। आप गृहस्थी हैं आपको ऊंचा जाने की आवश्यकता नहीं। आप को दो चार बातें मैं हमेशा बताता रहता हूं कि सुवह शाम सुमिरन घ्यान किया करो।

अपने मन को हमेशा अच्छा ख्याल दिया करो। अपने दिल से किसी के साथ घर में द्वेष, नफरत, बुग़ज हसद, कीना छोड़ दो। जब तुम अभ्यास करोगे जैसी तुम्हारे भीतर की वासना है, ध्यान करोगे तो तुम्हारी वह वासना पूरी हो जाएगी। लोगों की इस प्रकार से होती हैं, मेरी होती हैं और मैं हैरान होता हूं, मेरी अकल नहीं काम करती।

मेरी समझ में जो आया मैंने बता दिया मैंने अपनी ओर से मार्ग सुगम और साफ कर दिया कोई कठिनाई नहीं है मगर दुनियां सुगम को नहीं समझती। एक कहावत मुझे याद है देहली में हकीम अजमल खां थे। उनके पास काबिल का कोई नवाब आया, बीमार था, उन्होंने नबज़ देखी और तीन सौ रुपये की दवाई लिख दी। हकीम जी की आदत थी कि नमाज़ पढ़ने जाते तो रास्ते में गरीब लोग बैठ जाते उनकी नबज़ देखते जाते और किसी को दो पैसे की मूली के पत्ते और किसी को मामूली से नुस्खे बता देते तो नवाब भी गरीब बन कर आगे बैठ गया उसको भी बता

दिया उसने कहा आपने पहचाना ? हकीम ने कहा पहचाना। आप नवाब हैं, उस समय तो आपनें ३०० रुपये का नुस्खा क्यों बताया ? उन्होंने कहा तू आमीर था तुझे दो पैसे के नुस्खे पर विश्वास नहीं बैठना था। इसलिए यह बात आसान है मगर क्योंकि हमको बहुत से ख्यालात मिले हुऐ हैं कि यह कठिन है, हम आसान बात पर यकीन नहीं करते वैसे है आसान :—

बुल्लया खुदा दा की पाऊना, ऐथों पुटना ते ओथे लाना।

मेरे दिल में आपके लिए दर्द हैं मैं सच्चे दिल से चाहता हूं दाता। आपने यह कार्य सौंपा था मेरे पास क्या है ? मैं आप सब को शुभ भावना देता हूं आपका हितैषी हूं आप दुखी आते हैं मैं चाहता हूं दाता, इनका दुख दूर हो जाये। आप जिस इच्छा के लिए मेरे पास आते हैं आपकी इच्छा पूरी हो, इसके सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं न कुछ कर सकता हूं। आपका मन चाहे मेरे पास आओ जी चाहें न आओ, बस, यही कह सकता हूं दूसरे जो

अनुभव और समझ मैंने हासिल की है वो समझा देता हूं । तुम लोग विश्वास करो, तुम्हारे विश्वास में बहुत कुछ है, तुम में बहुत कुछ है । बाहर के गुरु की यही दया है कि वह हित देता है, ज्ञान और समझ देता है, सद्बुद्धि अर्थात् सही रास्ता और सच्चा मार्ग बताता है, मुश्किल को आसान कर देता है। गुरु के पास सच्चाई, ज्ञान और हकीकत के लिए जाया जाता है, वो उसके अज्ञान का नाश करके उसको अपने आप में ठहरा देता है । अपनी इज़्जत करनी आप सीखो, सब कुछ तुम्हारे पास हैं, केवल मन को सम्भालना है और कुछ नहीं । मन के ठहरने से जो हमें अनुभव होता है, बोध होता है, हम प्राय: उस अवस्था को ईश्वर, भगवान या मालिक समझ लेते हैं अपने रूप को आप पहचानो ।

नोट :—एक बच्चा है आप उसको देखना चाहते हैं उसको देखने से आपको खुशी प्राप्त होती है। बच्चा तो आपको कुछ नहीं देता वो क्योंकि खुश है उसको देखकर तुम्हारे भीतर खुशी आती है इसी प्रकार किसी को मेरी संगत करने से मेरे दर्शन

करने से मुझे मिलने और बातें करने से ख़ुशी, सुख व शान्ति नहीं मिलती तो मेरा दोष है आप लोगों का नहीं। एक महिला यदि पति को कामातुर नहीं कर सकती तो महिला का दोष है मगर यदि पति ही नपुंसक है तो स्त्री क्या कर सकती है। इसलिए जहां अधिकारी होते हैं वहां सत्संग से स्वयं ही उन की ज़िन्दगी बदल जाती है, मेरा कर्त्तव्य है कि अपने आप को क्रियात्मक बनाना। इसलिए मैं कोशिश करता हूं कि अपने आप को ठीक करुं ताकि मेरे जो मिलने वाले हैं वो अपने आप ठीक हो जायें। तुम खुश हो, जो तुम को देखेगा वो खुशी प्राप्त करेगा, तुम रोते रहते हो, दुखी होते हो जो भी देखेगा उसको भी दुख आएगा, बस, यही सत्संग है और कुछ नहीं।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 7-9-1980

गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठन।
पहूंचने वाले कहां तुझ, तक हैं बानी और वचन ।।
बुद्धि निर्णय कर नहीं सकती, न चित चिंतन के योग।
सोचने और समझने की, शक्ति पाता है न मन ।।
ज्ञानी अपनी युक्ति भूले, ध्यानी भूले ध्यान कर।
योगी थक कर हार बैठे, कर चुके जब सब जतन ।।
तू नहीं काशी न मथुरा, द्वारका में तू नहीं।
ढूंढने बन खण्डी और, तपसी चले हैं सूना बन ।।
मेरे हृदय में बसा रहता है, निस्सन्देह तूं।
राधास्वामी भेद बतलाया, लगी तुझसे लगन ।।

राधास्वामी ! यह शब्द सुना, इन मज़हबों तथा पंथों की वाणियों ने मेरे दिमाग़ को हिलाया हुआ था। देखना चाहता था कि सच्चाई क्या है।

ब्राह्मण के घर में पैदा होने के कारण हम रामकृष्ण, प्रभु, ईश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म को मानते थे। मेरी खुश किस्मती या वद किस्मती समझो, मौज समझो या मेरे कर्म समझो, कुदरत मुझे एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने यह संतमत मुझको दिया। राधास्वामी मत को बाणियों में ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म सब को नीचे बताया। यहां तक कि सत् को भी नीचे बताया। इससे आगे अलख, अगम और अनामी बता दिया। मैंने प्रण किया था इस रास्ते सच्चा होकर चलूँगा जो कुछ मेरी समझ में आया वो अपने कर्म भोग वश कहता हूं। दावा किसी बात का नहीं।

गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन।
पहुंचने वाले कहां तुझ, तक है बाणी और वचन॥

यह गुरु की महिमा है। इस गुरु तक कौन जा सकता है? जो पहले प्रभु, ईश्वर, परमेश्बर, ब्रह्म, पारब्रह्म व सत् सबसे आगे जाये तब वह गुरु के रूप को पहचान सकता है क्या यह ठीक है? हां यह

ठीक है। कैसे ? दुनियां ब्रह्म-ब्रह्म चिल्लाती है। ब्रह्म की प्रशंसा में किताबों की किताबें लोगों ने भर दीं, ब्रह्म का अर्थ है बढ़ना और मनन का अर्थ है सोचना। ब्रह्म क्या है ? प्रकाश है यह सारा संसार ब्रह्ममय कैसे है ? कोई जगह ऐसी नहीं जहां प्रकाश न हो और ब्रह्म भी चार प्रकार के हैं। १. सबल ब्रह्म, २. शुद्धब्रह्म, ३. पारब्रह्म, और ४. शब्दब्रह्म। शरीर में जो शक्ति है वो सबल ब्रह्म है। कई अभ्यासी अभ्यास करते हैं वो अपने अन्दर में सूर्य देखते हैं। सूर्य या आग से तो हम जल जायें मगर मन के अन्तर सूक्ष्म प्रकृति में वो जो सूर्य है उसके दर्शन करने से हम जलते नहीं। उस सूर्य में गर्मी नहीं है बल्कि प्रकाश है इस को शास्त्र कहते हैं शुद्ध ब्रह्म। इससे आगे है केवल प्रकाश ही प्रकाश, कारण प्रकृति, नूर ही नूर, उसको कहते हैं पारब्रह्म। अब जो वस्तु हमारे अन्दर है वो इस ब्रह्म को भी देखती है, प्रभु को भी देखती है, ईश्वर परमेश्वर को भी देखती है। ईश्वर और है, परमेश्वर और है, हरि और हैं। आप कहेंगे मैं यह क्या कह रहा हूं ? मैं ठीक कह रहा हूं। आग जलती है या प्रकाश है उस

में से जो हरारत पैदा होती है। वो जो हरारत है हमको सेंक देती है। वो जो हरारत है उसका नाम है ईश्वर, ज्योतिस्वरूप या प्रकाशमण्डल है। उसमें से जो तेज या हरारत निकलती है जिस तरह से सूर्य में से हरारत निकलती है वो माया है, उसमें ताकत है इसलिए वो ईश्वर है। वो हरारत जब शरीर में आती है उस समय जो सनसनाहट (Sensation) निकलती है वो मन है, उसका नाम हरि है। वो ही ईश्वर फिर (Gross Matter) में आकर के सृष्टि को रचता है। इस माया ही में ईश्वर, परमेश्वर, हरि प्रभु है। यह माया ही के पुत्र हैं यानि माया के ही भिन्न-भिन्न हालतों के नाम उन्होंने रखे हुये हैं। यह धर्म कहता है। साईंस क्या कहती है ? प्रकाश में से (Electrone) और (Protone) निकलते हैं और उनकी मिलावट से यह जमीन बन जाती है। यही बात शास्त्रों में अन्नमय कोष, प्राणमयकोष, मनोमयकोष, विज्ञानमयकोष, आनन्दमयकोष के नाम से कही गई है। चीज एक ही है। प्रत्येक विचार वाले ने उनको

भिन्न-भिन्न शब्दों से प्रस्तुत किया है। शब्द कहता है :—

गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना हैं कठिन।
पहुंचने वाले कहां हैं, उस तक बानी और बचन।

यो तो कहते हैं कि गुरु की महिमा मन बचन, कर्म से परे है। मैंने अभ्यास किया हैं अपने अन्तर में मैं स्वप्न देखता हूं, प्रकाश देखता हूं, शब्द सुनता हूं, जो चीज़ इनको देखती है वह विल्कुल अलग है। तुम देखने बाले और हो। प्रकाश व शब्द और है, मेरी समझ में जो चीज़ अपने अन्तर में प्रकाश के नज़ारो को रोशनी को देखती और शब्द को को सुनती है बो चोज़ असली गुरु है। उस तक न यह प्रकाश जा सकता है न कोई और क्योंकि वह ज़ब अलग होगी तो प्रकाश वगैरा सब कुछ समाप्त हो जाएगा। अब उस को कौन देखेगा ? न ब्रह्म वहां तक पहुंच सकता है न शुद्ध और शब्द वहां तक पहुंच सकता है क्योंकि वह उस शुद्धब्रह्म पार ब्रह्म वगैरा की साक्षी है, वल्कि उनको बनाने वाली है। वह जो मेरा अपना

अपने अन्तर में सभी चीजें देखता है। अगर वो न हो तो यह भी नहीं हैं वो कौन है ? गुरु क्या है ? ऐ इन्सान ! वो तेरा अपना आप है, वो तेरी अपनी ही जात है, तू स्वयं ही गुरु का रूप है। किस गुरु का रूप ? वो जो सब का साक्षी है। इसलिए राधास्वामी मत की सार वचन में लिखा हुआ है कि खुदा और परमेश्वर दोनों के पैदा करने वाले संत हैं। यह बात समझ नहीं आती थी, वर्षों के बाद यह भेद ज्ञात हुआ। आज मैं कहता हू कि यह जो कुछ लिखा है बिल्कुल ठीक है। कैसे ? संत आदमी का नाम नहीं है। संत हमारी आद की वो अवस्था या ज़ात है जो सबका आधार है। वो सब कुछ देखती है सब की साक्षी है, वही सब को पैदा करती है। अगर वो न हो तो यह भी नहीं हैं वो जब इस जगह पर होती है तो वो जात है। उस में औ ज़ात में फिर क्या अन्तर है। इसलिए खुदा और परमेश्वर के पैदा करने वाले संत हैं। ज़ात परम शान्ति का रूप है। वह कुछ नहीं करती उससे जो खुदा, परमेश्वर व ईश्वर वगैरा निकलते हैं सब कुछ करते हैं। जैसे पानी से भाप निकलती

है वो इजन चलाती है पानी नहीं चला सकता संत में केवल शान्ति की ताकत होती है। संत को देखकर अधिकारी आदमी खिच जाते हैं। तो असली चीज़ क्या है ? अनुवभ और ज्ञान। क्या अनुभव ? कि मैं कौन हूं। मैं वो चीज़ हूँ जो प्रकाश और शब्द वगैरा सब की साक्षी है। अन्त में मैं किस नतीजे पर आया कि जब तक जिन्दगी है मन व माया के रूप को समझ कर इसके असर में मत आओ और इसमें फंसो नहीं। गुरु तुम से अलग नहीं है वो तुम्हारे हृदय में रहता है, तुम्हारा अपना ही आप है।

"गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन।
पहुंचने वाले कहां है उस तक वानी और वचन।"

कैसे पहुंचेगे ? वाणी और वचन मन से होते हैं इसलिए पहुंच ही नहीं सकते। मैंने गुरु रूप को समझा और इस भेद को कि जितनी शकलें बनती हैं यह केवल मन के चक्कर का खेल है। इसलिए खोला कि इस भेद या पर्दे को खोल देने से जो समझ दार आदमी हैं अगर यह समझ जायें तो कम से कम

धार्मिक रूप से भिन्न समझकर आपस में लड़ें तो नहीं, ईशारा सब संत कर गये, अब इस शब्द में जो कुछ लिखा हुआ है यह ईशारा ही है। तो वह कहां है ? वो मेरे हृदय में रहता है आदमी के हृदय में कौन रहता है ? उसका अपना ही आप रहता है और कौन रहता है। गुरु कोई तुम से अलग है क्या ? बिल्कुल नहीं ! मगर आजकल प्रायः हम गुरुओं ने जीवों को मूर्ख बनाकर लूटा व पागल बनाया हुआ है सच्चाई नहीं बताई इसलिए मैंने तालीम को बदला है कि ऐ इन्सान ! अपनी नीयत को ठीक कर तुम को जो कुछ मिलता है वो किसी गुरु या खुदा ने नहीं देना तुम्हारे अपने ही कर्म, तुम्हारी अपनी ही नीयत और तुम्हारे अपने ही विश्वास का फल मिलता है, यह मेरी समझ में आया है। तो ईश्वर, परमेश्वर ब्रह्म आदि क्या निकले यह प्रकृति का खेल है। जो असली तत्व है, जो हम हैं जो हमारा रूप है वो इनसे ऊंचा है। हम नीचे आते हैं तो हम इनको अपने अन्दर प्रगट कर लेते हैं। अगर इनसे ऊपर चले जायें तो पता लगता हैं कि मैं कुछ और चीज़ हूं यह और चीज़ है।

बाहर के गुरु की इतनी ही Duty है कि वो जीव को भेद बताकर अपने आप में ठहरा दे। हमारे आत्मा या मन इस जिस्मानी प्रकृति के हिसाब से दुनियां में खेल करते हैं। हम अपने रूप को भूलकर इसको सत्य मानते हैं, इसके असर में आ जाते हैं और फंस जाते हैं मैं स्वयं काफी देर दुमते में फंसा रहा मगर चूँकि सच्चाई का मैं इच्छुक था गुरु की दया से जब मन व माया के रूप की समझ आई तो शरीर और मन में रहता हुआ ख्याल को ऊंचा रखता हूं, जिसको यह समझ आ गई और अपने रूप का ज्ञान है तो वह सब कुछ होता हुआ व सब काम करता हुआ उस चक्कर में फंसेगा नहीं। इस अवस्था का नाम हैं जीवन मुक्त अवस्था। इतनी ही कुँजी है संतमत की यह मेरी समझ में आया, संत अगर कुछ कर सकता है तो वो अपने आप को बचा सकता है कि मन माया के प्रभाव में मत आओ। तो गुरु कौन है ऐ इन्सान तेरा अपना ही Self जो है जो आधार है वो गुरु है, तूं आप गुरु है मगर क्योंकि गुरु फकीर चन्द नहीं, फकीर चन्द के ख्यालात नहीं, फकीर चन्द का मन नहीं,

दाता का कलाम है :—

लुतफ दानाई में नहीं, लुतफ नादानो में है
इसलिए तूँ कैदे जस्मानी में है ॥

जब ज्ञान हो जाता है तब लुतफ नहीं रहता। लुतफ दो में है। दो मिलते हैं तब आनन्द होता है मगर जहां आनन्द मिलता है वहां समय आने पर बेआनन्दी भी आ जाती है। दो में आनन्द है और दो में बेआनन्दी भी है। इसलिए संत यह कहते हैं कि पहले ज़िन्दगी में तजुर्बा करो। गृहस्थियों के लिए सबसे पहली आवश्यक वस्तु रोजी है। हर नौजवान को अपने पांव पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए। जब तक पहले यह नहीं है तुम लाख सिर पटक कर मर जाओ तुमको यह रूहानीयत का ज्ञान नहीं होगा। अकल से समझ जाओगे। अमली, रूहानी जिन्दगी तुम्हारी नहीं बनेगी। पहले जीवों का गृहस्थ का जीवन सुख से गुज़रे। जिसका गृहस्थ जीवन ही सुखमय नहीं है वो रुहानीयत में कहां जायेगा —

जा को दर्शन इत हैं, वा को दर्शन उत।
जाको दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत ॥

यह मेरा कर्म भोग था। मैंने प्रण किया था

कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा। इसलिये मैं ऊंची बात कह देता हूं। वरना आम दुनियां इतनी ऊंची बात या तालीम की अधिकारी नहीं है। आम दुनियां के लिए यही है इन्सानियत, कमाओ खाओ, घरों में शान्ति रखो, प्रेम करो, नफरत व द्वेष न करो।

सच्चिदानन्दं अखण्डं केवलं आनन्द दा।
ब्रह्म सर्वाधार सर्वाधार सर्वधाम है।।
रमने बाले आ के रम जा हृदय को बैठक बना।
फिर तो यह घट ही हमारा राधास्वामी धाम है।

राधास्वामी-धाम क्या है ? यह टैकनीकल शब्द है। सुरत का शब्द में लय हो जाने की हालत का नाम राधास्वामी है। सुरत शब्द का साधन किया करो। इससे घट में शान्ति मिलनी चाहिए। भटका मत खाओ। मन को ही सम्भालना है वस और कुछ नहीं। अगर ज्ञान हो जाये तो आदमी बीच की हालत में प्रभावित नहीं होता।

नोट :—मैंने आज सत्संग में कहा कि गुरु Self है, ज़ात है यही कबीर साहिब तथा संतमत की तालीम हैं। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं इससे आगे गया हूं। कैसे ? अगर हमारा Self ही ज़ात है तो क्या हम कुछ कर सकते हैं ? किसी में कुछ ताकत है कि दुनियां की हालत को सुधार दे ?

नहीं ! तो मैं किस नतीजे पर पहूंचा ? मैं कौन हूं ? उसकी हरकत के अन्दर एक चेतनता पैदा होती है। जिस तरह सोडे और टाटरी को मिला दो तो शूँ शूँ होती है इसी तरह उस आद अवस्था में जब हरकत होती है तो एक चेतनपना पैदा होता है। मैं भी चेतन का बुलबुला हूं। वो सुरत है, प्रकृति के मेल के समय उस चेतनता के अन्दर एक मैं आ जाती है वो मैं सारा खेल खिलाती है। आदमी दौड़ता फिरता है। यहां आकर मुझे क्या मिला ? अहं भाव चले गये। बस एक शरणागत जब तक जिन्दगी है उसकी मौज है जो चाहे खेल खिलाये। अपने बस में कुछ नहीं। मेरा यह तजुर्बा है। इतनी जिन्दगी के बाद मैं ऐसे अब जिन्दगी गुज़ारता हूं शरणागत न फिकर न चिन्ता जो हो रहा है हो रहा है, उसकी लीला कोई नहीं जान सका। कबीर साहिब और राधास्वामी दयाल ने भी रोचक बाणियां कह कर संत का इतना बड़ा भारी दर्जा बता कर लोगों को संतमत में शामिल कर दिया। क्या संत कुछ कर सकता है ? नहीं। मैं एक अवस्था में जाकर गुम हो जाता हूं। शान्ति आ जाती है, एक हालत हो जाती है। यह मेरा अन्जाम है जिन्दगी का :—

शरणागतं शरणागतं शरणागतं

गणतन्त्र दिवस

यह गणतन्त्र दिवस प्रत्येक वर्ष इसलिए मनाया जाता है कि इसी दिन अर्थात् 26 जनवरी 1929 को श्री जवाहर लाल नेहरू जी ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए कहा था और पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का प्रण किया था। मैं सच्चे हृदय से चाहता हूं कि कोई ऐसा नेता आये जो स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरु जी की तरह यह प्रण करे कि वर्तमान चुनाव प्रणाली को हटा कर प्रजातन्त्र में कुछ परिवर्तन लाये। क्यों ? जब से वर्तमान चुनाव प्रणाली और प्रजातन्त्र चला है शान्ति प्रिय लोगों का जीवन अशान्त और भयभीत है। यह क्यों है ? मेरे सतगुरु महर्षि शिवव्रत लाल जी कहा करते थे।

सुनते नहीं हैं ग़ाफिल, हरगिज़ मेरा कलाम,
बेदार हो के कहता हूं ताबीर खुश्राव की।

भावार्थ :—

मैं जाग्रत अवस्था अर्थात् चेतन होकर स्वप्न अवस्था की घटनाओं का अर्थ बता रहा हूं किन्तु

जो लोग जाग्रत अवस्था की घटनाओं का कारण नहीं जानते और असावधान हैं वो मेरी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं।

इन्सान के ख्याल में बड़ी भारी शक्ति है। इस का प्रमाण मैं सर्वदा दिया करता हूं कि जब इन्सान स्वप्नावस्था में होता है और कोई भयानक दृश्य देखता है तो उसकी ज़बान अपने आप बड़बड़ाती है, यदि वो स्वप्न में किसी को हाथ से मुक्का मारे तो स्वभाविक ही उसका हाथ हिल जाता है। स्वप्न में एक व्यक्ति काल्पनिक स्त्री बना लेता है, उसके साथ भोग करता है उसका वीर्य पात हो जाता हैं। यह स्वप्न के बिचार किसी के वश में नहीं हैं अगर कोई चाहे कि वो अपनी इच्छानुसार स्वप्न देखे तो यह नितान्त असम्भव हैं। अव आप विचार करें कि जब स्वप्न के विचार हमारे वश में नहीं हैं और उनका अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव शरीर पर पड़ता है तो हम कभी भी यह आशा नहीं कर सकते कि जो भाव और विचार हम जाग्रत अवस्था में करते हैं उनका प्रभाव हमारे

अपने शरीर पर क्यों न हो, इस वर्तमान प्रजातन्त्र में जो चुनाव प्रणाली हैं इसमें क्या हो रहा हैं बुद्धिमान व्यक्ति सोचें। इस प्रणाली में यह दल बन्दी है जिसके द्वारा लगभग प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर से घृणा, द्वेष, इर्ष्या के विचार निकलते रहते हैं। इनके प्रभाव से बचना कैसे सम्भव हो सकता है। देश के वर्तमान नेता मेरी इस बात पर ध्यान दें और सोचें कि वर्तमान वातावरण जो देश में है इसका क्या परिणाम होगा। आश्चर्य यह है कि विरोधी दल तो सरकार के हर ख्याल को चाहे अच्छा भी हो उसका विरोध करने पर तत्पर हैं।

अंग्रेजी राज्य में एक युवति स्वर्ण आभूषण पहन कर पेशावर से कन्याकुमारी तक अकेली यात्रा कर सकती थी और सुरक्षित रह सकती थी। उसको कोई कुछ कह नहीं सकता था। परन्तु आज स्त्री जाति को तन और धन की रक्षा करनी घरों में भी कठिन हो रही है। प्रत्येक स्थान पर लड़ाई

झगड़े, हड़तालें, घिराव माल और जान की हानि हो रही है। क्या यह सरकार है ? आसाम में क्या है। इसका कारण यही है कि हम लोगों के भाव, विचार हमारे वश में नहीं हैं। मैंने 1946 में आज़ादी की कुंजी' नामक किताब लिखी थी उसमें मैंने अपने अनुभव के आधार पर लिखा था कि जो विपत्तियें हम भारतवासियों को स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हो रही हैं जब स्वराज्य मिल जाएगा तो इससे भी अधिक विपत्तियां सम्मुख आएंगी। इस लिए अभी समय है कि वर्तमान बुद्धिमान लोग सोचें और ऐसी सरकार को लाने का प्रबन्ध करे जिससे लोगों को कुर्सियों, धन और पदवी को प्राप्त करने के लिए लोभ आदि करने का अवसर कम मिले। चाहे इस समय मानव जाति में अधिकतर गणना उन लोगों की है जो खुदरो पैदा हुये हैं अर्थात् उन को अच्छे और शुभ संस्कारों द्वारा उत्पन्न नहीं किया गया। ऐसी सन्तान से यह आशा रखना कि वो अनुशासन में रहेंगे यह असम्भव हैं। यदि कुछ सहायता या उपाय हो सकता है या तो उनको भय दो अथवा उनको अपने धर्म के पालन का ख्याल दो

और यह तभी सम्भव हो सकता है जब सरकार और ईश्वर का डर हो। मैं जानता हूं कि वर्तमान समय में मानव जाति की जो स्थितियां और परि-स्थितियां हैं इनका प्रभाव व्यर्थ नहीं जाएगा। विनाश होगा। चाहे वो युद्ध, भूचाल, बाढ़ें या और किसी रूप में हो अवश्य होगा, अवश्य होगा और अवश्य होगा। कई बार सोचता हूं कि जब "अनहोनी होय नहीं होनी हो सो होय" तो मेरे इस लिखने और भाषण देने का क्या लाभ ? हां विनाश के पश्चात् सम्भव है कि लोग मानवता की ओर आयें। मैं जानता हुआ भी कि क्या होगा फिर भी लिख रहा हूं केवल इसलिए कि मेरे गुरु महर्षि शिव व्रत लाल जी ने मुझको एक संस्कार दिया था।

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही॥

इस आदेश का पालन करते हुए मैंने स्वतन्त्रता दिवस पर भी अपने कई सन्देश दिये, इन्सान

बनो की आवाज उठाई तथा मानवता और अध्यात्मिकता का प्रचार करता हूं। यह मेरा कर्म भोग है किसी पर कोई उपकार नहीं। मैं आशा करता हूं कि देश के महापुरुष विचारशील बनेंगे और हम शान्तिप्रिय लोगों को इस समय जो विपत्तियां आ रही हैं उनको दूर करने के लिए कुछ प्रयत्न करेंगे।

बन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख़्श दो निज नाम॥
तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊँ नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसंग
15-2-81 को होगा।

सूचना

हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज का जीवन-चारित्र हिन्दी भाषा में छप रहा है। जो सज्जन इसको मंगवाना चाहें शीघ्र ही सेक्रेटरी मानवता मन्दिर को लिख दें।

डा: के० एल० जौड़ा
एम.एस. सी., पी.एच.डी.
रीटार्यड यूनीवर्सटी प्रोफैसर
शासक मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! कुछ कहना चाहता हूं । मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तालाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम किया । प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा । दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना । आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं । मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है । मेरी अपनी कुरीद अर्थात् हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिये मैं अपने लिये इस अनुभव को सत्य मानता हूं ।

अब मैं बूढ़ा हो गया । मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया । केवल एक खुशी है कि

इस फंसाओ में मैंने निज स्वार्थ अर्थात धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर है। खर्चे बहुत बड़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिये रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिये लाभदायक है तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहे मुफ्त

मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना जीवन क्रियात्मिक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन की भ्रम शंकायें दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, असली शान्ति नहीं मिलेगी। अधिक क्या लिखूं चले चलाओं का समय है, मैंने वसीअत *(Will)* कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर इश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरीका में हैं) और मुन्शी राम भगत मानवता और रुहानियत का प्रचार करेंगे। मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के अधीन हैं। ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें केवल प्रकाशन का काम जारी रखें। अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का *(Statue)* धरती में गाड़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manvta the true religion.
4. Religious Reserch. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan 16. Autobiography of Faqir

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद। 2) कबीर साखी। 3) अनुभवसार

तथा भक्ति ने नरसिंह का रूप प्रकट किया। फ़कीर बाबा का यह भी कहना है कि इस प्रकार के चमत्कारी दिखने वाले सभी अनुभव मानसिक स्तर पर ही होते हैं। इस स्तर पर भक्तों का ईश्वर के प्रति अगाध प्रेम, जो उनके मन से उठता है, उस ब्रह्माण्ड के मन को प्रेरित करता है, जिसे सन्त-मत काल कहता है। परन्तु मोक्ष का धाम इस स्तर से परे है। मानसिक स्तर की व्याख्या देने का उद्देश्य यह है कि विभिन्न धर्म इसी स्तर पर ही रुक जाते हैं और इसी के कारण ही अनेक मत मतान्तर तथा सम्प्रदाय बन गए हैं। तथ्य तो यह है कि इन विभिन्नताओं के अन्तस में इनके एकत्व का भेद छुपा है। इस तथ्य की व्याख्या पुस्तक के अन्तिम अध्याय में दी जायेगी।

फ़कीर बाबा की यह व्याख्या कि ऐसे सभी रूप मानसिक स्तर पर ही होते हैं और उनका आकार व्यक्ति विशेष के विश्वास पर ही निर्भर रहता है उनके व्यक्तिगत अनुभव पर ही आधारित है। उन के

इस सिद्धान्त की पुष्टि भगवद्गीता और वैदिक साहित्य के द्वारा की जा सकती है। भगवान विष्णु अथवा हरि का सम्बन्ध विश्वव्यापी मन से है। हरि का अर्थ मन भी है। वेदों में त्रिगुणात्मक विश्व की सृष्टि को, मनोमय प्राणात्मक ब्रह्म की धरणा पर आधारित माना गया है। यह मनोमय प्राणात्मा वह त्रिविध शक्ति है, जिससे अनेक ब्रह्माण्डों का संचालन तथा पोषण हो रहा है। इस तथ्य की व्याख्या यथा स्थान की जायेगी।

भगवद्गीता में, भगवान कृष्ण को महायोगेश्वर हरि कहा गया है और पुरुषोत्तम भी कहा गया है। हरि मानसिक स्तर का नाम है और पुरुषोत्तम मानसिक स्तर से परे है। भगवान कृष्ण ने कहा है कि मानसिक स्तर पर भक्तों की मानसिक इच्छाएं पूरी होती हैं, किन्तु परम धाम इस स्तर से परे है। पुरुषोत्तम के इस स्तर की व्याख्या उस अध्याय में की जायेगी, जिसमें फ़कीर बाबा के 'चमत्कारों से परे' नामक दर्शन का उल्लेख है। फ़कीर बाबा ने यह बताते हुए कहा कि भक्तों की इच्छाओं की पूर्ति

भगवान के मानसिक स्तर द्वारा होती है और भगवान का वास्तविक स्वरूप मानसिक स्तर से परे है, स्वयं अपने शब्दों में कहा है, "मैंने यह कब समझा ? केवल उस समय समझा जब मुझे यह बताया गया कि मेरा रूप लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकट होता है जब कि मैं वहां उपस्थित नहीं होता और न ही मुझे उसका कोई ज्ञान होता है। इसी प्रकार जो कुछ भी सहायता लोगों को चाहे कृष्ण के रूप, राम के रूप, बुद्ध के रूप, मूसा के रूप, ईसा के रूप, मोहम्मद के रूप अथवा किसी गुरु के रूप से मिलती है, वह मनुष्य के अपने मन का ही खेल है। मैंने तो यही समझा है। मैं नहीं जानता कि मैं ठीक हूं या गलत। सभी धर्मों और मतों के अनुयायी अपने अपने विश्वासों से प्रभावित होकर अपने ही मन की शक्ति के द्वारा सहायता प्राप्त करते हैं और भ्रम में हैं कि कोई बाहर की शक्ति उनको सहायता देती है।"*

*मानवता मन्दिर जून १९८०, पृष्ठ ३२-३३

इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि फ़कीर बाबा की यह व्याख्या ग़लत नहीं है, भगवद्गीता द्वारा पुष्ट की जा सकती है। भगवान कृष्ण ने यह बतलाते हुए कि उनका वास्तविक रूप मानसिक स्तर से परे, जन्म मृत्यु से परे विश्वातीत स्तर पर है, "मानसिक" स्तर अथवा विश्वातीत स्तर में परस्पर भेद किया है। उनके अनुसार लोग मानसिक स्तर पर ही ईश्वर के विभिन्न रूपों अथवा देवी देवताओं की पूजा करते हैं और उन्हें तुरन्त सांसारिक लाभ होता है। किन्तु विश्वातीत एवं मोक्ष के स्तर की प्राप्ति केवल विश्वास के द्वारा ही नहीं, अपितु साधना तथा सांसारिक विषयों के प्रति वैराग्य से ही प्राप्त हो सकती है। भगवान कृष्ण अर्जुन को कहते हैं, "हे अर्जुन! जो लोग मुझे जिस रूप में भजते हैं, मैं उसी रूप में ही दर्शन देता हूं.......वे लोग जो देवताओं के अनेक रूपों की इस इच्छा से पूजा करते हैं कि उन्हें सांसारिक सफलता मिले, वे इसी (मानसिक) कर्म के कारण तुरन्त सफलता प्राप्त करते हैं।"*

---

*भगवद्गीता, अध्याय चौथा, श्लोक ११-१२।

गीता में धार्मिक अनुभव के मानसिक स्तर की निन्दा नहीं की गई, किन्तु उसकी उचित व्याख्या की गई है। जब कोई व्यक्ति ईश्वर के किसी विशेष रूप की दृढ़ विश्वास से पूजा करता हैं, तो उसका वही विश्वास उसके अपने ही मन के कारण अधिक दृढ़ हो जाता है। मन मनुष्य के व्यक्तितत्व का वह अंग है, जिसका सम्बन्ध विश्वव्यापी मन से है। फ़कीर बाबा ने इन दोनों (व्यक्तिगत मन तथा विश्वव्यापी मन) को सहस्रदल कमल कहा है। यही विश्वव्यापी मन अथवा सहस्रदल कमल विश्वास को दृढ़ बनाता है और अपने आप को उसी रूप में प्रकट करता है जिसके दर्शन की भक्त की अपनी इच्छा होती है। भगवान कृष्ण ने कहा है, "जो भक्त अपनी इच्छाओं की पूर्ति के विचार से, ईश्वर के जिस विशेष रूप की पूजा करता है, मैं उसके उस रूप में विश्वास को अधिक दृढ़ कर देता हूं।"

फ़कीर बाबा ने इसी व्याख्या को धर्म के क्षेत्र में "मांग और पूर्ति (Law of demand and supply)" कहा है। व्यक्तिगत मन (सहस्रदल कमल) अपने

भगवद्गीता अध्याय ७, २१।

धर्म से प्रभावित होकर ईश्वर के किसी रूप में दृढ़ विश्वास के साथ विशेष प्रकार की इच्छा अथवा मांग करता है और विश्वव्यापी मन (काल) उसकी उस इच्छा की पूर्ति करता है। सभी धर्मों के तथा-कथित चमत्कारी अनुभवों की व्याख्या, इसी नियम के द्वारा की जा सकती है। मोजिज़, जीज़स क्राईस्ट तथा अन्य धर्मों से सम्बन्धित चमत्कारी घटनाएं इसी विश्वव्यापी मन के नियम के अन्तर्गत हैं।

मोजिज़ (मूसा) मिश्र में बसे हुए यहूदियों की दुर्दशा से बहुत चिन्तित था। उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि वह अपनी जाति वालों को मिश्र के राजा रमसीस (Ramses) के अत्याचारों से बचाए। इसके साथ ही साथ उसका ईश्वर और फ़रिश्तों अथवा देवताओं में भी दृढ़ विश्वास था। इसलिए उसे जिहोवा (Yaweh) के रूप में ईश्वर का अनुभव हुआ। यहूदियों के धर्म ग्रन्थ अंजील में इस घटना को इस प्रकार बताया गया है, "जब मूसा अपने ससुर जैथरो (जो कि मिडियान का पुरोहित था), के भेड़ों के झुण्ड को चरा रहा था, तो वह भेड़ों

को मरुस्थल के पश्चिम की ओर ले गया और होरेब नामक देवता के पर्वत पर पहुंचा। उस समय ईश्वर का फ़रिश्ता एक झाड़ी से ऊपर उठते हुए आग के शोले के रूप में प्रकट हुआ। मूसा ने देखा कि झाड़ी में आग प्रज्जवलित थी, किन्तु झाड़ी जल नहीं रही थी, जब वह झाड़ी को ठीक तरह से देखने के लिए मुड़ा तो ईश्वर ने झाड़ी में से पुकार कर कहा, "मूसा! मूसा! मैं यहां हूं। तुम मेरे निकट नहीं आओ, अपने जूते उतार दो, क्योंकि तुम जहां खड़े हो वह पवित्र भूमि है। मूसा ने अपने चेहरे को छुपा लिया, क्योंकि ईश्वर को भय के कारण देख नहीं सका। ईश्वर ने कहा "मैंने अपने उन लोगों की दुर्दशा देखी है, जो मिश्र में हैं और मैंने उनकी वह आहट सुनी है, जो आतताईयों के कारण है। मैं उनके दुःख दर्द को जानता हूं, इसलिए उन्हें मिश्रियों से बचाने के लिए नीचे उतरा हूं, जहां पर दूध शहद की नदियां बहती हैं। वह वही देश है जहां पर कैनानाईट, हिटाईट, एमोराईट, हिवाईट और जैबुसाईट जातियां रहती हैं......इसलिए तुम आगे बढ़ो। मैं तुम्हें फैरो (मिश्र के राजा)

के पास भेजता हूं । तुम मेरे इस्राईलियों को मिश्र से निकाल कर लाओ।"*

मूसा इस अनुभव से प्रभावित हुआ और उससे प्रेरित होकर मिश्र में गया और अपनी जाति वालों को वहां से निकाल लाया। सत्य बात तो यह है कि मूसा का ईश्वर को मिलना उसके अपने ही मन के स्तर पर हुआ था। अंजील में इस बात की पुष्टि होती है कि मूसा के द्वारा अनुभूत ईश्वर का रूप किसी व्यक्ति विशेष का रूप नहीं था बल्कि एक मानसिक अभिव्यक्ति थी। जब मूसा ने ईश्वर से (जिस पर वह भय के कारण दृष्टि नहीं डाल सका था) पूछा कि उसका नाम क्या है, तो उसको यही उत्तर मिला, मैं वह हूं, जो हूं (I am who I am)" मूसा ने समझा था कि वह ईश्वर उसके पूर्वजों का ईश्वर था, परन्तु उस अभिव्यक्ति से उसे जो उत्तर मिला वह वैसा नहीं था। यहां पर एक बार फिर अंजील का कथन करना आवश्यक है।

---

*स्मिाय और गुडस्पीड द्वारा रचित अंजील का अमरीकी अनुवाद। प्रकाशक शिकागो विश्वविद्यालय मुद्रणालय १९३५ Ex. ३-१-१५।

"मूसा ने ईश्वर को कहा, "यदि मैं अपनी जाति वालों को जाकर कहूं कि उनके पूर्वजों के ईश्वर ने मुझे उनके पास भेजा है, और वे मुझसे पूछें कि उस ईश्वर का नाम क्या है, तो मैं उन्हें क्या उत्तर दूं।" ईश्वर ने मूसा को उत्तर दिया उन्हें कहना, 'मैं वह हूं जो हूं। जो नाम अंजील में ईश्वर को दिया गया है वह जिहोवा अथवा यावेह है जिसका अर्थ "मैं हूं जो हूं" है।

बाबा फ़कीर ने उपरोक्त अंजील के कथन को कभी पढ़ा नहीं है, किन्तु उनके द्वारा दी गई ऐसे अनुभवों की व्याख्या अंजील के ऊपरोक्त कथन की पुष्ट करती है। इसी प्रकार ईसा मसीह से सम्बन्धित वे सभी तथाकथित चमत्कारी घटनाएं, जो उनकी मृत्यु से पूर्व अथवा पश्चात घटित हुई मन की शक्ति तथा विश्वास शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। जब ईसा मसीह

किसी रोगी को स्वस्थ कर देते तो कहते, "मैंने नहीं, बल्कि तुम्हारे अपने विश्वास ने ही तुम्हें ठीक किया है और ईसा मसीह ने यह भी कहा "तुम सब ईश्वर के पुत्र हो। तुम मेरे से भी अधिक महत्वपूर्ण काम करोगे। उनके ऐसे कथन विश्वास और मन की शक्ति को ही सिद्ध करते हैं।

इस्लाम के संस्थापक हज़रत मोहम्मद को पढ़ना लिखना नहीं आता था। वह मक्का के निकट हीरा पर्वत की कन्दरा में ध्यान लगाने के लिए जाते थे। उस कन्दरा में से एक दिन एक फ़रिश्ता प्रकट हुआ और उसने हज़रत मोहम्मद को एक लिखित संदेश दिखाते हुए कहा, "उस ईश्वर के नाम पर इसे पढ़ो, जिसने मनुष्य को एक रक्त के बिन्दु से रचा है। तुम्हारा ईश्वर बहुत उदार है, उसने अपनी लेखनी के द्वारा मनुष्य को वह शिक्षा दी है, जिसका मनुष्य को ज्ञान नहीं था।*

मोहम्मद ने अनपढ़ होते हुए भी उस सन्देश को

---

* आरबी ए० जे० द्वारा लिखित कुरान की व्याख्या

पढ़ा और एक अल्लाह का प्रचार करने लगा। इस्लाम के अनुयायी इस घटना को एक चमत्कारी घटना मानते हैं और इसी कारण मुसलमानों का यह विश्वास है कि केवल हज़रत मोहम्मद के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

हज़रत मोहम्मद के अनुभव को झूठा नहीं कहा जा सकता, किन्तु यहां पर फ़कीर बाबा द्वारा दी गई तथाकथित चमत्कारी घटनाओं की वैज्ञानिक व्याख्या विशेष महत्व रखती है। उन्होंने अपने अनुभव पर आधारित तथा उन हज़ारों लोगों द्वारा पुष्ट व्याख्या, जिन्होंने उनके रूप को देखा है, यह प्रमाणित करती है कि मानव जाति का अनेक धर्मों तथा मत मतान्तरों में बट जाना एक भ्रम पर ही आधारित है। यदि फ़कीर बाबा के 'मनुष्य बनो' के धर्म को समझ लिया जाय, तो यह भ्रम दूर हो सकता है।

———

मनुष्य का स्वरूप तथा चमत्कारी घटनाएं

फकीर बाबा ने "मनुष्य बनो" का नारा लगा कर मानवता धर्म का प्रचार करने के लिए मानवता मन्दिर की स्थापना होशियारपुर पंजाब में की है। इस मानवता धर्म को समझने की क्या आवश्यकता है ? मनुष्य मात्र अनेक मत मतान्तरों तथा धर्मों में बटा हुआ है। उसका मुख्य कारण यह है कि तथाकथित चमत्कारी अनुभवों के वास्तविक स्वरूप को समझा नहीं गया है। इस बात को स्वीकार नहीं किया गया है कि ऐसी घटनाएँ किसी बाहरी शक्ति के कारण नहीं होती, बल्कि मनुष्य के मन की अन्दर की अवस्था पर निर्भर है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य का आन्तरिक रूप ही उनका कारण है।

नुष्य के मन का यह रूप ब्रह्माण्ड के मन का छोटा नमूना है, इसलिए उसमें चमत्कारी घटनाओं को

पैदा करने की शक्ति है। मनुष्य के मन में ऐसे विचार के रूपों को पैदा करने को शक्ति है, जो आश्चर्यजनक होते हैं। वे रूप जो मनुष्य की मानसिक शक्ति से पैदा होते हैं, उसको हर प्रकार से सहायत करते हैं, उसकी समस्थाओं को सुलझाते हैं, रोगों से मुक्त करते हैं, दुर्घटनाओं से बचाते हैं और अनेक बार उसे समाधि के ऊंचे स्तरों पर भी ले जाते हैं। मनुष्य को अपनी इस शक्ति का ज्ञान नहीं होता। इस बात का समझना बहुत आवश्यक है कि मनुष्य को अपने रूप का ज्ञान न होने के कारण ही अनेक धर्मों में बट जाना पड़ा है। यदि उसको यह ज्ञान हो जाय कि चमत्कारी घटनाओं का कारण उसका अपना ही मन है, तो वह उन्हें अपने से बाहर किसी दूसरी शक्ति का वरदान नहीं समझेगा।

पानी पर चलना, दो चार रोटियों से हज़ारों लोगों की भूख मिटाना और इसी प्रकार ईश्वर के नाम से रोगियों को स्वस्थ करना ऐसी विचित्र घटनाएं नहीं हैं, जिन्हें ईश्वर की शक्ति

का प्रदर्शन कहा जाय। ये घटनाएं तो मनुष्य के अपने ही मन की स्वाभाविक क्षमता की अभिव्यक्ति हैं। मनुष्य का यह मानसिक अंग उसके मानवी रूप का एक सूक्ष्म अंग है और प्रकृति के विश्वव्यापी सूक्ष्म मन से सम्बन्धित है।

बाबा फ़कीर ने मनुष्य को इस क्षमता को सीधे सादे शब्दों में स्पष्ट व्याख्या की है। उन्होंने मनुष्य के उस ऊंचे स्तर की भी व्याख्या की है, जिस पर उसे आध्यात्मिक अनुभव होता है। इससे यह पता लग जाता है कि मनुष्य की शक्ति केवल मन के स्तर तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि मनुष्य अपने आप में ही पूर्ण है। केवल अज्ञान के कारण वह ऐसा मानता है कि यह पूर्णता कहीं बाहर से आती है। यही कारण है कि मनुष्य सदैव किसी बाहरी वस्तु का सहारा लेता है। वह ईश्वर के किसी व्यक्तिगत रूप को अथवा किसी पैग़म्बर अथवा अवतार को ही ईश्वर मान लेता है। वह न ही केवल इस सहारे पर निर्भर रहता है, बल्कि उस सहारे को

ही परम सत्ता मान कर कट्टर बन जाता है। वह उसी सहारे की पूजा करता है और उस पूजा के लिए अनेक कर्म काण्ड तथा सिद्धान्तों में अपने आप को बांध देता है और ईश्वर के वास्तविक गुरु रूप को न पहचान कर इधर उधर भटकता रहता है। दाता दयाल के शब्दों में,

फ़कीरा गुरु तो तेरे पास,
तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वासों स्वास।
गुरु नहीं काशी गुरु नहीं मथुरा, गुरु नहीं विच कैलाश।
ढूंढ इसे अपने हृदय में, वहां है गुरु का बास।

इस मान्यता से कि सच्चा गुरु तो मन में होता है, अज्ञानता के कारण मनुष्य जाति अनेक धर्मों में बट गई है। इस गुट बन्दी के कारण सारे संसार में प्रेम और ऐकता के स्थान पर घृणा और संघर्ष का बोल बाला है।

विभिन्न धर्मों के अनुयायियों ने अपने २ धर्म संस्थापकों अथवा गुरुओं के मानवीय रूप को न पहचान कर, अज्ञानता के कारण उनको अलग २ ईश्वर मान लिया है। यदि उन व्यक्तियों को

मनुष्य के असली रूप का ज्ञान हो जाये, तो वह अपने गुरुओं की पूजा करने तथा अलग २ मत मतान्तरों में बट जाने के स्थान पर, उनके आदर्श जीवन का अनुकरण करेंगे। इस प्रकार सभी धर्मों के अनुयायी वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकते हैं और वास्तविक प्रेम का अनुभव करके धार्मिक जीवन के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं। वास्तव में, धार्मिक होने का अर्थ सच्चा मनुष्य बनना है। इसलिए फ़कीर बाबा ने जिस मानवता धर्म का नारा लगाया है, वह सभी धर्मों में भ्रातृभाव ला सकता है। यही मानव धर्म मनुष्य को उसके परम लक्ष्य परमधाम की ओर भी ले जा सकता है।

फ़कीर बाबा ने इस ऊंचे दार्शनिक सत्य की सरल भाषा में व्याख्या दी है। वह बार २ कहते हैं कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है, इसलिए पूर्णता प्राप्त करने का पहला कदम यही है कि वह सच्चा मनुष्य बने। वेद और उपनिषद् भी मनुष्य को पूर्ण मानते हैं। उनमें यह लिखा कि ब्रह्माण्ड में मनुष्य ही सबसे ऊँची सत्ता है। ईशोपनिषद् के आरम्भ में यह लिखा है :—